Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

हरियाणवी लोक नाट्यों का प्रोक्तीय अध्ययन-विश्लेषण

Baljeet Kaur[1]* Dr. Sumitra Chaudhary[2]

[1] Research Scholar, Ph.D. in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Research Director, Assistant Professor, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – लोकनाट्य किसी क्षेत्र विशेष से सम्बन्ध रखने वाले छोटे आकार के नाटकों को कहा जाता है। हरियाणा क्षेत्र के लोक नाट्य हिन्दी-साहित्य के इतिहास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

----------X----------

सामान्य परिचय:

हरियाणा राज्य ने हिन्दी साहित्य की नाट्य-परम्परा में विशेष योगदान दिया है। यहाँ के जींद जिले के महाकवि साहिब सिंह 'मृगेन्द्र' कृत 'चूरीगर नाटक' हरियाणा की नाट्य परम्परा में अग्रणी व महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसमें एक सौ दस छन्द हैं। इस लोकनाट्य में हरियाणवी तथा पंजाबी बोली का अत्यन्त सुन्दर प्रयोग किया गया है। इसके पश्चात् हरियाणा राज्य में लोक-नाट्यों से जुड़ी एक लम्बी परम्परा चली है। यहाँ हरियाणवी लोकनाट्यों का प्रोक्तीय स्तर पर अध्ययन-विश्लेषण किया गया है। इससे पहले 'प्रोक्ति' के विषय में पर्याप्त जानकारी प्रापत करना भी आवश्यक है।

प्रोक्ति - 'प्रोक्ति' आधुनिक युग की महत्त्वपूर्ण विचारधारा अथवा समीक्षा सिद्धान्त 'शैलीविज्ञान' के क्षेत्र में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। यह 'शैली' का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

'प्रोक्ति' दो शब्दों के मेल से बना है- 'प्र+उक्ति' इसका अर्थ है- विशेष कथन। इसके लिये अंग्रेजी में दो शब्दों का प्रयोग किया जाता है-डिस्कोर्स (Discourse), अटरैंस (Utterance)। 'प्रोक्ति की संकल्पना शैलीविज्ञान की ही देन है जिसकी सर्वप्रथम चर्चा एम.ए. हैलीडे ने की।'[1]

'प्रोक्ति' का शब्दकोशीय अर्थ है- A long and serious discussion of a subject in speech or writing. [2]

भारतीय विचारकों के मत

1. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार – "प्रोक्ति या पाठ वाक्यों का एकमात्र जमघट न होकर उनकी संरचनात्मक या दूसरे अर्थ में कहीं तो सर्जनात्मक रूपान्तरण होता है।"[3]

2. ओमप्रकाश शर्मा के विचारानुसार – "प्रोक्ति वह वाक्योपरि संरचना है जिसमें वाक्य से आगे फैली तार्किक इकाई समाहित होती है।"[4]

पाश्चात्य विचारकों के मत

1. सोल स्पोर्टा ने लिखा है- "भाषा विज्ञान में विश्लेषण हेतु मुख्य इकाई वाक्य है, परन्तु शैलीविज्ञान में उससे बड़ी इकाई प्रोक्ति है।"[5]

2. हैलीडे के अनुसार- "प्रोक्ति भाषा की सक्रियात्मक इकाई है।"[6]

प्रोक्ति के प्रकार - अभिव्यक्ति के आधार पर प्रोक्ति को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-एकालाप और संलाप। जब व्यक्ति अपने आप से वार्तालाप करने लगता है तो उसे एकालाप कहा जाता है। वक्ता और श्रोता का परस्पर किये जाने वाले वार्तालाप को संलाप कहते हैं।

'प्रोक्ति' के अंतर्गत 'संसक्ति' का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, जिसका अर्थ है- 'जुड़ाव'।

संसक्ति दो प्रकार की होती है- (क) स्थानिक (ख) सार्वत्रिक। इनके आगे भी उपभाग हैं यथा-सन्दर्भ, तर्क, वातावरण, प्रतीक आदि। इन्हीं आयामों के आधार पर हरियाणवी लोकनाट्यों का प्रोक्तीय अध्ययन-विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है-

www.ignited.in

हरियाणवी लोकनाट्यों का प्रोक्तीय अध्ययन-विश्लेषण:

हरियाणा में लोक-नाट्यों की परम्परा आदिकाल से ही चली आ रही है। यहां आदिकाल से लेकर अब तक के सुप्रसिद्ध लोक-नाट्यों का प्रोक्ति-स्तर पर अध्ययन-विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. **स्थानिक संसक्ति के आधार पर -** प्रोक्ति के अंतर्गत स्थानिक संसक्ति का विशेषण महत्त्व है। इसके अंतर्गत वाक्य निर्देशक-तत्त्वों, सर्वनामों, विलोम, पर्यायवाची शब्दों, विराम चिह्नों द्वारा संसक्त होते हैं अथवा जुड़े होते हैं।

एक उदाहरण प्रस्तुत है-

"राजा का भाई नवल सिंह सदा मतवाला।

अरै तूं घणै दिनां का फिरै था जाट रोपण नै चाला।

इस नालकी नै फूंक हो घोड़े अवारा।

ये राजे अम्बेर कै आ बंध्या पाला।

ब्रज अर मैवात का ईब गलै हवाला।

तेरा समरू साहिब कित गया ढाई चादर आला।"[7]

यहाँ 'राजा का भाई', 'तूं', 'इस' 'ये' 'तेरा' शब्दों के माध्यम से सम्पूर्ण काव्यांश को संसक्त किया गया है। यहाँ सर्वनाम सम्बन्धी संसक्ति भी उद्धृत होती है।

सार्वत्रिक संसक्ति के निम्नलिखित आयामों के आधार पर हरियाणा के लोकनाट्यों का प्रोक्तीय स्तर पर विश्लेषण किया जा सकता है।

2. **सन्दर्भपरक संसक्ति:** सन्दर्भ से जुड़े हुये वाक्यों के परस्पर जुड़ाव को सन्दर्भपरक संसक्ति कहा जाता है। हरियाणवी लोक-नाट्यों में यह विशेषता सर्वत्र देखी जा सकती है। हरियाणा की सुप्रसिद्ध कथा 'गूगा पीर' की कथा मानी जाती है। यह एक वीर-गाथा है जिसका मुख्य उद्देश्य गूगा पीर की वीरता व्यक्त करना है। इसी सन्दर्भ से जुड़ी पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

"बोलै बाछल के कहै सुण सरियल मेरी बात,

बरसण लागे मेंह घणे भरियण लागैं ताल,

बाजण लागें पीपले (तलवार बजना) भाज कहां बड़ जा,

बेटी राज्जे संझ की मेरा सूत्या सेर जगा,

जती सिंझा की जाई जी-"[8]

इस प्रकार यहाँ कथा के संदर्भ से जुड़े वाक्यों को संसक्त किया गया है।

3. **तर्कपूर्ण संसक्ति:** जब कथा का कोई पात्र (नायक-नायिका से भिन्न) अपना विशेष स्थान निर्धारित कर लेता है, तो वहाँ इस प्रकार की संसक्ति उपस्थित होती है। हरियाणवी लोकनाट्यों में यह संसक्ति सरलता से दृष्टिगोचर होती है। गूग्गा पीर जी की पत्नी जब उन्हें युद्ध हेतु प्रोत्साहित करती हैं, तो वहाँ उनके मौसी के दो बेटों अरजन-सुरजन का चरित्र मुख्य रूप से उभर कर सामने आता है।

यथा -

"जस्त जोड़ गुग्गा कहै सुण तरलोकी के नाथ,

पहली अरजी मेरी सुणो मेरा पहलै करो निसाफ,

पहले करो निसाफ तेरी गद्दी को सीस भुवाया,

अरजन-सुरजन नै किया बाद, जा दिल्ली में बादसाह झकाया,

बाईस लाख मरद घोड़ा चल ददरेरे में आया,

पहिले पैरा बण्या पीर मैं परत पाल नां पाया।"[9]

इस प्रकार यहां अरजन-सरजन का चरित्र मुख्य बन जाता है।

4. **वातावरण सम्बन्धी संसक्ति:** प्रत्येक रचना में किसी न किसी प्रकार का वातावरण अवश्य होता है। हरियाणा के लोक-नाट्यों में भी यहां के आकर्षक वातावरण का बड़ा ही सुन्दर चित्रण बड़े यथार्थ रूप में दिखाई देता है।

जैसे –

"रै बाल्ली, तेरे खेत पड़े खाली

तेरे चेहरे पै आग्यी लाली,

www.ignited.in

तनैं दो दुकान खोली,

एक बी न चाल्ली।"[10]

इस प्रकार यहाँ हरियाणा के नौजवानों की दशा व दिशा का बड़ा ही यथार्थ चित्रण किया गया है। हरियाणा के नाट्य लेखक शादीराम जी ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है कि-उस समय का वातावरण स्वतः पाठकों के समक्ष उपस्थित हो जाता है।

यथा -

"करनाल जिला पंजाब में गुहला है तहसील।

एक कस्बा सीवन वहाँ कैथल से पाँच-छः मील।।

राजपूतों का नगर गुलजार हुआ।

वैश्यों के सैंकड़ों घर होंगे जहाँ जयराम दास साहूकार हुआ।

एक इंग्लिश मिडल स्कूल जहाँ जलसा एक सुधार हुआ।

छोटा-सा आदमी एक हाजिर वहाँ शादीराम गंवार हुआ।

कहना सत बानी, प्रेम से मिल सब प्राणी।

सब फिरकों को छोड़ बनो एक हिन्दुस्तानी।"[11]

इस प्रकार उस समय का भौगोलिक, जातीय, शैक्षणिक आदि वातावरण स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

5. **प्रतीक संसक्ति:** जब लेखक प्रतीकों के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए वाक्यों को संसक्त करता है तो वहाँ प्रतीक संसक्ति होती है। हरियाणा के लोक-नाट्यों में जन-मानस से जुड़े प्रतीकों का प्रयोग ही अधिक मिलता है। यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि-यहाँ लेखकों ने अपनी बात अनेक स्थलों पर बड़े सीधे-सीधे शब्दों में प्रतीकों का सहारा लिये बिना भी स्पष्ट की है। बालकराम और अहमद बख्श कृत 'रामायण' साँग-शैली में लिखी गई है। इसका एक उदाहरण प्रस्तुत है-

"दर्शन हुये राम के, एक लता की ओट।

चित चपला चकरित भया, लगी प्रेम की चोट।।

सोहनी सूरत मोहनी मूरत, रोम-रोम में छाई।

दर्शन अन्न् जल की सुध-भूल गई, ऐसी छवि भरमाई।।

इधर नेत्र सिया के मिले, उधर नेत्र रघुबीर।

प्रेम बाण कस कै लागा, बिंध गया सकल सरीर।

लगी ललक झलक दर्शन रघुबर ना झपकी पलक सुख ढेर लिया।

जब तकत-तकत बहुत थकत गई, पकड़त मुख अंचल गेर लिया।।"[12]

यहाँ लेखक ने प्रतीकों का कम परन्तु अत्यन्त आकर्षक उपयोग किया है। चित को 'चपला', प्रेम को 'बाण' बताया गया है।

6. **चारित्रिक संसक्ति:** किसी कृति के पात्रों के चारित्रिक गुणों को व्यक्त करने वाले वाक्यों के समूह में चारित्रिक संसक्ति की विशेषता विद्यमान होती है। हरियाणा के लोक-नाट्यों में किसी-न-किसी महान पुरुष के चरित्र को ही उजागर किया गया है। इसका उद्देश्य ये है कि-हमें उन महापुरुषों के जीवन से प्रेरित होना चाहिये।

पं. लख्मीचंद ने अपने साँग में सावित्री के पिता के माध्यम से सत्यवान के चरित्र को अन्य कवियों की अपेक्षा विचित्र रूप में उद्घाटित किया है। सांग का एक छन्द देखने योग्य है-

"नीति और वेदान्त शास्त्र कुछ ज्योतिष का ज्ञान भी हो।

तुरंग बजावै भाल चढ़ावै कुछ मलखण्ड बलवान भी हो।

नृत्य कला और गदा घुमावैं चैदह विद्या निधान भी हो।

वस्त्र पहरै शस्त्र लावै छोटे बड़े का मान भी हो।

पैर में पदम माथे में मणि मनैं गौड़्यां तक कर चहिये सै।

इन्द्री-जीत पराक्रमी मेरी बेटी को वर चाहिये सै।"[13]

इस प्रकार यहां सावित्री के पिता के माध्यम से उन चारित्रिक विशेषताओं को उजागर किया गया है जो उसे एक वर में चाहिये। इस कारण यहाँ चारित्रिक संसक्ति का गुण विद्यमान है।

www.ignited.in

निष्कर्ष:

अंतः इस प्रकार हरियाणा के लोक-नाट्यों का शैली के मुख्य तत्त्व 'प्रोक्ति' के आधार पर अध्ययन-विश्लेषण किया जा सकता है। संसक्ति की इस विश्लेषण के अंतर्गत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। स्थानिक और सार्वत्रिक संसक्ति के विभिन्न् आयामों यथा-तर्क, संन्दर्भ, वातावरण, प्रतीक, बिम्ब, चारित्रिक आदि के आधार पर हरियाणा के लोक-नाट्यों का अध्ययन-विश्लेषण करने के पश्चात् पता चलता है कि-ये इन सभी आयामों की कसौटी पर खरे उतरते हैं। इनमें कही गई कथाएँ सरिता के प्रवाह की भांति निरन्तर बहती-सी प्रतीत होती हैं, उनमें कहीं उलझाव या बिखराव नहीं है। सहजता और सरलता इन लोक-नाट्यों की मुख्य विशेषता है। इसके अतिरिक्त प्रोक्तीय अध्ययन-विश्लेषण के पश्चात् हरियाणा के लोक-नाट्य अत्यन्त उत्कृष्ट एवं सशक्त कहे जा सकते हैं।

संदर्भ-सूची:

1. हेतु भारद्वाज (सम्पा.), पंचशील शोध समीक्षा, जुलाई-सितम्बर 2010, पृ. 8
2. (सम्पा.) सुरेश कुमार, रमानाथ सहाय, ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोश ग्यारहवां सं. जनवरी-2010, पृ. 338
3. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, संरचनात्मक शैलीविज्ञान, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1979, पृ. 96
4. ओमप्रकाश शर्मा, प्रोक्ति संरचना-हिन्दी भाषा: प्रयोग के स्तर, सं. 1997 ई., पृ. 43
5. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', शैलीविज्ञान: प्रतिमान और विश्लेषण, पृ. 64
6. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु', वही, पृ. 65
7. रघुबीर सिंह मथाना, डॉ. बाबू राम, हरियाणवी साहित्य का इतिहास, पृ. 71
8. रघुबीर सिंह मथाना, डॉ. बाबू राम, वही, पृ. 85
9. वही, पृ. 86
10. वही, पृ. 98
11. वही, पृ. 170
12. वही, पृ. 163
13. वही, पृ. 185

Corresponding Author

Baljeet Kaur*

Research Scholar, Ph.D. in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan